शेख़ फ़रीद – सबद ४९
पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८०

पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ॥
जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड ॥४५॥

सार: अहंकार अपनी पुष्टि के लिए दिखावे, प्रशंसा और दूसरों पर श्रेष्ठता के भाव पर निर्भर रहता है। अहंकार अक्सर क्षणिक नियंत्रण को स्थायी महत्व समझ लेता है जिससे उसमें अपनी छवि खोने का भय उत्पन्न होता है। बाहरी शक्ति अक्सर भीतर की असुरक्षा को छिपा लेती है। परिणामस्वरूप, हम क्षणभंगुरता की रक्षा के लिए छल-कपट का सहारा ले सकते हैं और शाश्वत नैतिकता को खो सकते हैं। ताक़त मौत को पहचानने की समझदारी में है, जो समानता स्थापित करने वाली शक्ति है जहाँ ख़ास अधिकार वाले और ताक़तवर लोग भी अंततः बेसहारा और कमज़ोर लोग की तरह इसी धरती में समा जाते हैं ।

पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ॥
उनके पास ढोल बजते हैं, सिर के ऊपर शाही छतरियाँ तनी और बिगुल के साथ उनकी शान-शौकत का बयान करने वाले गीत गाए जाते हैं। यह दृश्य अहंकार-जनित मान्यता, सार्वजनिक सत्ता के आकर्षण और स्थायी अधिकार के भ्रामक वादे का चरम प्रतीक है।

जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड ॥४५॥
वह क़ब्रिस्तान में सो गए हैं, बेसहारा अनाथों की तरह उन्हें भी दफ़ना दिया गया और वह मिट्टी में मिल गए हैं। यह दृश्य मृत्यु को समता स्थापित करने वाली शक्ति के रूप में दर्शाता है जहाँ विशेषाधिकार प्राप्त और प्रभावशाली लोग भी अंततः उसी मिट्टी में मिलते हैं जिस मिट्टी में निर्धन और असहाय लोग मिल जाते हैं। (४५)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद सत्ता के शोर की तुलना विनम्रता की शांति से करके, 'महत्व' के भ्रम को चुनौती देते हैं। वह हमें याद दिलाते हैं कि भौतिक संपत्तियाँ हमें जीवन के अनिवार्य परिवर्तनों से नहीं बचा सकतीं, वह भले ही कुछ समय के लिए हमारा ध्यान भटका दें लेकिन वह नश्वरता को पराजित नहीं कर सकतीं। अंततः हर पहचान और हर ऊँच-नीच का अंत एक ही होता है। आख़िर में, हम सब मिट्टी में ही मिल जाते हैं और जो बात वास्तव में अर्थपूर्ण है, वह है हमारे अंतर्मन की गुणवत्ता और वह प्रेम, जिसे हमने अपने जीवनकाल में दूसरों के साथ बाँटा होता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com